P.G. SEM I Paper - III

हिन्दी साहित्य में रामकाव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ -

सगुण भक्तिधारा के अंतर्गत दो प्रकार के काव्य का निर्माण हुआ - रामकाव्य एवं कृष्णकाव्य। वे कवि जिन्होंने राम को अपना आराध्य मानकर काव्य रचना की, प्रभु की के कवि हैं। राम को विष्णु का अवतार एवं अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र के रूप में जाना जाता है, अतः रामभक्ति के रूप में वैष्णव भक्ति का पुनरुत्थान ही मध्यकालीन राम काव्य में किया गया है। वैष्णव भक्ति का प्रचार प्रसार करने का श्रेय रामानुजाचार्य रामानन्द निम्बार्काचार्य मध्वाचार्य एवं श्री विष्णु स्वामी जैसे आचार्यों को जाता है। साथ ही इस काव्यधारा में महाकवि गोस्वामी तुलसीदास का स्थान इतना अधिक ज्योतित है कि अन्य कवि उनके सामने चमक नहीं सके हैं। अन्य कवि तथा उनके काव्य का अध्ययन करने पर निम्नलिखित प्रमुख प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं -

(1) राम का पुरुषोत्तम रूप - रामभक्तों के इष्ट देव विष्णु के अवतार होकर भी पूर्णब्रह्म और 'विधि हरि सम्भु नचावन हारे' हैं। धर्म के उद्धार और पापों के नाश के लिए ये प्रत्येक युग में अवतरित होते हैं। ये शील शक्ति और सौंदर्य की प्रतिमूर्ति हैं। ये आदर्श के प्रतिष्ठापक और मर्यादापुरुषोत्तम हैं। रामभक्ति में कृष्णभक्ति की प्रतीकात्मकता का अभाव है। राम भक्ति में भी कृष्ण भक्ति के अनुकरण पर रसिक-उपासना चली पर जनता ने उसे अपनाया

नहीं। विशुद्ध रामकाव्य में राम युगपुरुष और दलितों के नेता आदि के ही रूप में चित्रित हुए हैं।

(2) मर्यादापूर्ण वर्णन — रामकाव्य में प्रायः मर्यादा की पूर्ण झलक मिलती है। इसी कारण श्रृंगार और विशेषकर संयोग-श्रृंगार का इसमें पूर्ण परिपाक नहीं हुआ है। किन्तु यह बात तुलसी जैसे मर्यादावादी कवियों के लिए ही ठीक बैठती है। 18वीं शती से रामकाव्य में माधुर्य भावना का पुट धीरे-धीरे बढ़ता दिखाई पड़ता है। यह कृष्णकाव्य की माधुर्यमयी उपासना विषयक रचनाओं का प्रभाव है। इसलिए रामायत सखि सम्प्रदाय में 'अष्टयाम' 'नखशिख' इत्यादि के वर्णन मिलते हैं। रामकाव्य में सभी रसों का प्रयोग है क्योंकि रामकथा इतनी व्यापक है कि संपूर्ण भावों का अपूर्व संयोग हो जाता है। तुलसी के मानस में मानव-जीवन की विविध परिस्थितियों एवं भावनाओं का बड़ा मार्मिक चित्रण है। इन्होंने मर्यादा का अतिक्रमण कभी नहीं किया है।

(3) लोक संग्रह की भावना → लोकसंग्रह की भावना का जितना उदात्त रूप रामकाव्य में चित्रित हुआ, अन्यत्र नहीं। मध्यकालीन निवृत्तिमूलक हिन्दू-जीवन को इसी ने प्रवृत्ति-मूलक बनाया है। तुलसी ने 'विधि हरि शम्भु नचावन हारे' और कुर्ग कोटि अमित भी आकृष्ट किया। धनुषधारी राम की भक्ति और उपासना को प्रचलित करने वाला तुलसी मात्र वैरागी बाबा ही नहीं थी, बल्कि संसार को 'सियाराममय' समझकर जनत

को सुख : दुख में साथ देनेवाला, जनता की विपन्नावस्था में नेतृत्व कर सही राह दिखानेवाला महात्मा भी था। इसी से तो उसने पारिवारिक कवि का रूप धारण किया। दशरथ के परिवार का सफल रूप उपस्थित कर हिन्दू परिवार के आदर्श का स्थापन किया। लोकोत्थान के प्रयत्न में तुलसी ने अपना जीवन होम कर दिया था।

④ दास्य भक्ति की प्रधानता - दास्य भक्ति की प्रधानता राम काव्य की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विशेषता है। तुलसीदास की स्पष्ट घोषणा है - " सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि।" इष्ट देव के रूप में शील, शक्ति और सौन्दर्य के आगार राम ही हैं, पर अन्य देवताओं के प्रति भी यहाँ सम्मान भावना ही है। शिव की भक्ति के बिना तो राम की भक्ति असंभव ही है सामान्य रूप से कहा जायगा कि समाज के प्रत्येक पूज्य और श्रेष्ठ तत्व के प्रति पूज्य भावना ही इस भक्ति का आदर्श है। इसमें नवधा भक्ति का भी महत्वपूर्ण स्थान है। कृष्णभक्ति के प्रभाव के कारण राम भक्ति में भी मधुरोपासना को स्थान मिला। 'गीतावली' में हिंडोला-विहार और होली वर्णन आदि प्रसंगों को देखकर कुछ विचारक ऐसा भी मानते हैं कि मधुरभक्ति का प्रभाव तुलसी पर भी पड़ा है। सखी-सम्प्रदाय की अनेक रचनाओं में मधुरोपासना के नाम पर अनेक अश्लील शृंगारी चेष्टाओं के भी वर्णन हुए हैं, पर इसका क्षेत्र सीमित समझना चाहिए।

(5) तुलसी का एकाधिकार – समस्त रामकाव्य पर विचारने से एक बात सर्वाधिक स्पष्ट होती है कि इस काव्यधारा में तुलसी का एकाधिकार सा है। इस सम्बन्ध में डा० माता प्रसाद गुप्त की यह मान्यता देखी जा सकती है "हिन्दी राम भक्ति में अनेक कवि हुए, किन्तु राम भक्ति धारा का साहित्यिक महत्व अकेले तुलसीदास के कारण है। धारा के अन्य कवियों और तुलसीदास में अन्तर तारागण और चन्द्रमा का नहीं है तारागण और सूर्य का है। तुलसी की अपूर्व आभा के सामने वे साहित्याकाश में रहते हुए भी चमक न सके।" इस कथन से तुलसी की महत्ता स्पष्ट हो जाती है।

(6) समन्वयात्मकता – यों तो भारतीय दृष्टि ही समन्वय पर विश्वास करती रही है, किन्तु साहित्य में समन्वयात्मकता की दृष्टि से रामकाव्य का अपूर्व स्थान है। तुलसी अपनी समन्वय-बुद्धि के कारण ही लोकनेता और युगावतार के रूप में मान्य हो सके हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि तुलसीदास की सफलता का सबसे बड़ा कारण उनका समन्वयवाद ही है। ज्ञान का भक्ति से निर्गुण का सगुण से, शिव का राम से, प्रबन्ध का मुक्तक से, ब्राह्मण का शूद्र से अवधी का ब्रज से लोकमत का साधुमत से समन्वय कर रामकाव्य ने अपनी उदारता और विस्तृत परिधि का परिचय दिया है। इसी से तो भारतीयों के मन में राम का अमिट रूप अंकित हो सका है।

(7) कृष्ण काव्य का प्रभाव – रामकाव्य मूलतः वैधी भक्ति का रूप लेकर ही विकसित हुआ; किन्तु उस समय कृष्णभक्ति का रंग गाढ़ा हो चुका था कृष्णभक्ति की मधुरोपासना का प्रभाव रामकाव्य पर पड़े बिना नहीं रहा। सखी संप्रदाय का विकास मूलतः इसी प्रभाव के कारण हो सका था। इससे रामकाव्य में विकृति तो आयी ही, आगे राम काव्य जो न विकसित हो सका, उसका एक कारण यह भी था।

(8) रचना शैली की विविधता – राम काव्य की एक अन्यतम विशेषता यह भी है कि इसमें रचना शैलियों की विविधता पायी जाती है। रामकाव्य मूलतः प्रबन्धात्मक है पर मुक्तकों का भी कम उपयोग नहीं हुआ है।

(9) छन्द की विविधता – काव्य शैलियों की तरह इसमें छन्दों का वैविध्य भी उपलब्ध है। दोहा और चौपाई की मुख्यता होते हुए भी कवित्त, सवैया, सोहर, बरवै, कुण्डलिया, सोरठा, घनाक्षरी, छप्पय, त्रिभंगी, विनय के पद इत्यादि अनेक छन्द प्रयुक्त हैं।

(10) भाषा की विविधता – भाषा के विचार से भी राम काव्य में अनेक साहित्यिक भाषाएँ प्रयुक्त हुई हैं। तुलसीदास के 'रामचरितमानस' की भाषा में अवधी का विशुद्ध साहित्यिक रूप मिलता है, ठेठ रचनाओं इन्होंने अवधी से ब्रज का मेल कर अद्भुत भाषाधिकार का परिचय दिया है। केशव के रामचन्द्रिका की भाषा ब्रजी है गुप्त जी का साकेत और निराला की राम की शक्ति पूजा हिन्दी में है (खड़ीबोली)

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि रामकाव्य भारतीयों के लिए प्राणस्वरूप है।